

14 $\frac{5}{18}$

पञ्जावली आज ईश्वर को ही लक्ष्मी के पेश
है। प्रकृत से संबंधित वाउ पत्र का निर्देश
है प्रकृत है प्रकृत आस्था निवेद्यता का
जाही रखने का कोई औचित्य नहीं है। तब
प्र. प्रकृत आस्था निवेद्यता ही अर्पवही इसी
एतर पर खारीय ही जाती है पञ्जावली ईश्वर
भुक्त होकर गन्धर से प्रकृत है तथा पञ्जावली
दाखिल दपत्तर है।

उपखण्ड अधिकारी
उदयपुरवादी (मुन्त्र)